

धर्मरत्न वज्राचार्य कुरुत श्री महाबिहार

DM 277.

करवगघडच छज

श्रीसरस्वत्यैसारा



ॐ नमः शीवजवानाथे ॥ ॐ आः ह्रीं श्रीं मत्तवजसतयुनूवनचनदाकमलायसंम्य
 हानावरासनुकवायनमहं ॥ ॥ उत्थोदहंगनहितावनदेहधमीनकपु
 लविजयनीगुधगुनूपाव
 चयामिगतगंजननीजिना
 पमानवेगदाकानजगत्स
 सुहृदंरुद्र ॥ ॐ गुरुदंरुद्र
 वनेविद्यानाजदंरुद्र ॥ ॐ धननदिवर्धकत्वा ॥ ॥ मनुष्यधन ॥ ॐ हः

हाः श्रीः अरुवस्वाहा ॥ पूनपागुनूयगाम्हावयग ॥ श्रीः कावदपचराजनी
 मांकावदामासकीकृष्णादिरजावजवजहस्ताहंकावदमक्रायकृष्णविशु
 जंवजवजहस्तागयासंपूग
 ॐ सर्वरुद्रकोमिनिसर्वरुद्र
 व्यापिनीधनधयदंरुद्रकाव
 नवीर्यहकावजसुगताकानवसवयग ॥ ॐ अमृगअमृगपुवराहं ॥
 तगावामकनमध्वनकपुवदलकमलध्वत्वा ॥ ॐ गुलादि ॥ ॐ वं काला

हांयां चाला जोंमां दधूला ऊं जों अंगुला ऊं वला रुद्र रुद्र पविंद कां ॥ पागुस
 वानगुमाले सहाय ॥ ॐ ॐ ॐ सर्व वृक्ष जके नीय वज वरु नीय वज वे वाचनीय ॥
 ऊं ऊं रुद्र रुद्र स्वाहा ॥ नगा र्ग न्या ॥ ॐ वेंनालो हांयां हृदि जोंमां वकु ऊं जों मि
 लसि ऊं ऊं गिवायी रुद्र रुद्र स
 वज ॥ ॐ हाः स्वाहा ॥ घृष्ट ॥ ॐ अ
 ग ॥ ॐ अकाल मुख सर्व धर्मा
 ॥ वलि ॥ ॐ अः ॥ महुला धिष्ठान ॥ ॐ स्नाने मे न कृ ॥ ॐ योगी मे न कृ ॥ ॐ

आत्माने मे न कृ ॥ ॐ अन्न न स्नानात्मया गन का ॥ ॐ स्वरा वलु धा सर्व धर्मा नी स्वा
 वलु धा ॥ ॐ न्यता स्नान वजु स्वरा वात्मको ही ॥ ॐ गिमकु मूयार्य पुरा स्र न मभा पु धिधन
 चिह्न नल वस दात्माने निर्मलान्
 क्षणीत भव रुद्र यो प विवामे द
 न पत्रि वृक्ष दिने भम लुल मक्ष
 ध्या सिध्न वरु लु गम नल लि त का रु स्वरा वं मूल व कु द शि हा का लान नी वामः
 पा र्थ धृ ग र व द्वा ग वाम क न ग ही ग न क पू र्ण गी त क पाल द शि ध प गृ नी र्ध नी ल

वज्रकर्णिकां ध्यात्वा भवार्थं सुमां गमनि वसनां गिन सिद्धिं विमाला वैशिर्गाम् कनील
 कूटलमिवात्र ह्यपतिमूखाणि नगाग्रवक्रा धि वाननां सन सन नगि नो धु निते हाना ल
 कर्णं भृगुमन्वीनवीरुत्सनीदह्य स्येयान कर्कशं धर्मं गम किं न वना ध्येन
 संसमचिर्गचकीकृषुलेकली प्रावकमथलो सुगादिहिः प्रभूदामुदितास
 फार्क किं न धा हवनं मिपुणम दुलापुनिमर्षपर्यं कृत्यैरगवगी लोवथता
 निर्माधचकुल्लिगवंकावनमि माला रेन कनिष्ठु रवनेव किं न नदवती
 माकृष्य समय देवयर्कं हावथे ॥ ३ ॥ ॐ जीवजवाना हीपवने सखा नाय पाद्या धाचिम
 नैपाक्रमनैयणी च स्वाहा ॥ ॐ हूं वं हां ॥ वलिसर्ल वतय ॥ पूर्वायागा ॥ ॐ सर्ववृद्धा किनी

यवजपूष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ वज्रवर्कनीयवजपूष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ वज्रवेभावनीवजपूष्य
 आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ ॐ जियानायवजपूष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ पूर्वगिनि कायवजपूष्य आ हं
 रुद्र स्वाहा ॥ ॐ कामरूपायवजपूष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ शीहतायवजपूष्य आ
 हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ धर्मानकायव जपूष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ संलगकायवजपू
 ष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ निर्माध कायवजपूष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ महासूखका
 यवजपूष्य आ हं रुद्र स्वाहा ॥ ॐ ॐ आन द्यवर्किय ॥ ॐ पंलां धं तु नं ॥ कालमद्यपेटला
 कनीचले विद्युद्गर्गपेटला धिकस्त्रिर्वसत्तलजिनयुगपुदा हित्वानमामि जगदमहं न
 को नाहिवक कूहनाम्पूना गिता वज्रवा निज समाज संखा सोधमालन सपाननै प



